भील जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

कल्पना भण्डारी
पीएच. डी. शोधार्थी,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, म.प्र.

सारांश :– *जहाँ तक जनजातिय क्षेत्रों में आधुनिकीकरण के अंगीकरण का सवाल है, उन्हें आधुनिकीकरण को अपनाने में अभी भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन समस्याओं में यातायात के साधनों की कमी, शिक्षा एवं जागरूकता की कमी, आर्थिक पिछड़ापन एवं सिंचाई के साधनों का अभाव और कृषि उपज मण्डियों एवं बाजारों का दूर होना प्रमुख हैं। साथ ही जनजातियों के रूढ़िवादी एवं परम्परावादी दृष्टिकोंण के कारण स्थानीय संसाधनों के उपयोग का भरपूर दोहन न कर पाना कारण माना जा सकता है। शासकीय प्रयासों के परिणामस्वरूप लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उन्हें विशेषकर आधुनिकीकरण का अंगीकरण किया जाना जरूरी है। जनजातिय क्षेत्रों में जिन लोगों ने आधुनिकीकरण को अपनाया है, उन लोगों की स्थिति में सुधार हुआ है। फिर भी स्थानीय बाजार न होने के कारण आर्थिक दशा में अपेक्षित सुधार नहीं हो पा रहा है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश के आदिवासी बाहुल्य जिला झाबुआ को चयनित किया गया। जिले के ग्रामीण जिले के ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत भील जनजाति के समस्त परिवारों को अध्ययन के समग्र के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु झाबुआ जिले की पाँच तहसीलों में से* ***(प्रत्येक तहसील से 8 गांव)*** *कुल 40 गांवों को दैव निदर्शन विधि द्वारा चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया। इस हेतु सर्वप्रथम सभी तहसीलों के गांवों की सूची शहर से दूरी के आधार पर तैयार की गयी तत्पश्चात् 20 गांव शहर के नजदीक एवं 20 शहर से दूर स्थित गांवों का चयन दैव निदर्शन संख्या तालिका (Random Number Table) का उपयोग कर की गयी। अध्ययन में चयनित प्रत्येक गांव से 10 भील जनजाति के उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि का प्रयोग कर 200 उत्तरदाता शहर के नजदीक के गांवों से एवं 200 उत्तरदाता शहर से दूर स्थित गांवों से कुल 400 उत्तरदाताओं को चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया। वर्तमान समय में भील जनजाति को शासकीय स्तर पर विभिन्न योजनाओं और परियोजनाओं का लाभ प्रदान कर समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का सराहनीय कार्य किया जा रहा है। इन योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ प्राप्त कर भील जनजाति के लोग अपना सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक विकास करने में सक्षम हो रहे हैं। जिसका इनके जीवन पर प्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होता है। अतः हम कह सकते हैं कि भील जनजाति के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक जीवन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव सकारात्मक रूप से पड़ रहा है लेकिन आज भी ये लोग अन्य जातियों और जनजातियों की तुलना में विशेष रूप से पिछड़े हुये हैं।*

प्रस्तावना :– जनजातियों की संस्कृति विश्व के लिए आकर्षण का केन्द्र रही है। भील जनजाति भारत की तीसरी तथा मध्यप्रदेश की पहली बड़ी जनजाति है। यह जनजाति झाबुआ के अतिरिक्त मध्यप्रदेश के धार, पश्चिमी एवं पूर्वी निमाड़, रतलाम, नीमच, मंदसौर आदि जिलों में भी निवास करती है। भारतीय जनगणना 2011[1] के अनुसार झाबुआ जिले में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 891,818 (87 प्रतिशत) है। इस दृष्टि से झाबुआ सर्वाधिक जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है। भील जनजाति मध्यप्रदेश के अतिरिक्त राजस्थान, महाराष्ट्र तथा गुजरात में पायी जाती है।

विदेशी आक्रमणों के कारण जनजातिय समूह दूरस्थ पहाड़ों एवं निर्जन वनों में निवास करने लगे। प्रकृति से सामंजस्य व अनुकूलन स्थापित करते हुए वे सीमित संसाधनों का उपयोग कर, साथ ही कृषि व पशुपालन करके यह अपनी जीविकोपार्जन करने लगे। अंग्रेजी शासन काल में जमींदारी प्रथा के परिणामस्वरूप इनकी स्वतन्त्र सामाजिक

[1] भारतीय जनगणना 2011, DCHB जिला झाबुआ, मध्यप्रदेश।

व्यवस्था पर कुप्रभाव पड़ा। स्वतत्रता के पश्चात् अनुसूचति जनजाति के विकास के संवैधानिक प्रयास किय गये। उनके विकास के विशेष प्रयास कल्याणकारी राज्य द्वारा उठाये गये। देश में भूमि पर कार्य करने वाले भूस्वामी बने। भूस्वामी बनने के साथ ही सरकारी जमीन के पट्टे अपने नाम करने की प्रक्रिया आरम्भ हुयी जिससे जनजातिय लोगों को कृषि भूमि को अपने नाम कराने हेतु सरकारी कार्यालय जाना पड़ा। सरकार से जुड़ने के साथ वे नगरों व विकसित गांवों के सम्पर्क स्थापित हुआ। जिसके कारण जनजातिय समूह शहरों में आने से आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से परिचित हुआ।

आधुनिकीकरण से आशय :– आधुनिक युग में विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में युगान्तकारी परिवर्तन हुए हैं, जिसके चलते सामाजिक और आर्थिक जीवन में अनगिनत परिवर्तन हुए हैं और यह परिवर्तन विश्व स्तर पर चल रहा है। इसी परिवर्तन को स्पष्ट करने के लिए समाज वैज्ञानिकों ने आधुनिकीकरण जैसी अवधारणा का प्रयोग किया है। कुछ लोगों ने आधुनिकीकरण को प्रक्रिया में माना है तो कुछ ने प्रतिफल के रूप में। **आइजनस्टेड** ने इसे एक प्रक्रिया मानते हुए लिखा है, ''ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिकीकरण उस प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं की ओर परिवर्तन की प्रक्रिया है जो कि सत्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका में और बीसवीं तक दक्षिणी अमेरिकी, एशियाई व अफ्रीकी देशों में विकसित हुई।''

वैनेडिक्स ने बताया कि 1760–1830 में इगलैण्ड की औद्यागिक क्रांति तथा 1784–1794 में फ्रांस की क्रांति के दौरान आधुनिकीकरण पनपा[2]। **ए. आर. देशाई** ने आधुनिकीकरण को मानव को सभी क्षेत्रों में, विचारों में तथा क्रियाओं में होने वाले परिवर्तन की प्रक्रिया माना है[3]। जबकि **सक्सेना** इसे मूल्यों से जुड़ा प्रत्यय मानते हैं[4]। **श्रीनिवास** ने बताया कि आधुनिकीकरण किसी पश्चिमी देश के प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्पर्क के कारण किसी गैर पश्चिमी देश में होने वाले परिवर्तन के लिए प्रचलित शब्द है[5]। **श्यामचरण दुबे** ने आधुनिकीकरण को वह प्रक्रिया बताया है जो परम्परागत या अर्द्ध–परम्परागत अवस्था से प्रोद्योगिकी को किन्हीं इच्छित प्रारूपों तथा उनसे जुड़ी हुई सामाजिक संरचना के स्वरूपों, मूल्यों, प्रेरणाओं एवं सामाजिक आदर्शों नियमों की ओर होने वाले परिवर्तनों को स्पष्ट करती है[6]।

जहाँ तक जनजातिय क्षेत्रों में आधुनिकीकरण के अंगीकरण का सवाल है, उन्हें आधुनिकीकरण को अपनाने में अभी भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन समस्याओं में यातायात के साधनों की कमी, शिक्षा एवं जागरूकता की कमी, आर्थिक पिछड़ापन एवं सिंचाई के साधनों का अभाव और कृषि उपज मण्डियों एवं बाजारों का दूर होना प्रमुख हैं। साथ ही जनजातियों के रूढ़िवादी एवं परम्परावादी दृष्टिकोंण के कारण स्थानीय संसाधनों के उपयोग का भरपूर दोहन न कर पाना कारण माना जा सकता है। शासकीय प्रयासों के परिणामस्वरूप लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उन्हें विशेषकर आधुनिकीकरण का अंगीकरण किया जाना जरूरी है। जनजातिय क्षेत्रों में जिन लोगों ने आधुनिकीकरण को अपनाया है, उन लोगों की स्थिति में सुधार हुआ है। फिर भी स्थानीय बाजार न होने के कारण आर्थिक दशा में अपेक्षित सुधार नहीं हो पा रहा है।

शोध प्रविधि :–

अनुसंधान प्रचना :– प्रस्तुत अध्ययन में शोध उद्देश्य की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक शोध प्रचना का उपयोग किया गया है।

---

[2] बेनडिक्स आर० (1967) ट्रडिशन एण्ड माडर्निटी रिकंसीडर्ड, कम्पेरेटिव स्टडीज इन सोसायटी एण्ड हिस्ट्री, वॉन्यू – 9 पृ. 326।
[3] देशाई ए. आर. (1971) एसेज ऑन माडर्नाईजेशन ऑफ अन्डरडेवलप्ड सोसायटीज, वाल्यु – 1, ठक्कर एण्ड क. बाम्बे, पृ. 32।
[4] सक्सेना आर. एन. (1972) माडर्नाईजेशन एण्ड डेवलपमेण्ट ट्रेन्ड्स इन इण्डिया, सोशियोलॉजीकल बुलेटिन, वाल्यु – 21।
[5] श्रीनिवास एम. एन. (1956) सोशल चेंज इन मॉडर्न इण्डिया, एलाईड पब्लिशर्स, बाम्बे, पृ. 50।
[6] दुबे एस. सी. (1971) एक्सपेंशन एण्ड मैनेजमेण्ट ऑफ चेंज, टाटा मैग्रा हिल, नई दिल्ली, पृ. 67–68।

अध्ययन के उद्देश्य :– आधुनिकीकरण का भील जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

उपकल्पना :– प्रस्तुत शोध कार्य से भील जनजाति के जीवन पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का उनके सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डाला है।

अध्ययन क्षेत्र :– प्रस्तुत अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश के आदिवासी बाहुल्य जिला झाबुआ को चयनित किया गया।

अध्ययन का समग्र :– प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र झाबुआ जिले के ग्रामीण जिले के ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत भील जनजाति के समस्त परिवारों को अध्ययन के समग्र के रूप में सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन की इकाई :– प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र झाबुआ जिले के ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत भील जनजाति के चयनित उत्तरदाता को अध्ययन की इकाई के रूप में सम्मिलित किया गया है।

निदर्शन विधि :– प्रस्तुत अध्ययन हेतु स्तरीकृत निदर्शन विधि का उपयोग कर उत्तरदाताओं को चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जो कि निम्न प्रकार है :–

तालिका 1

झाबुआ जिले में उत्तरदाताओं का चयन

जिला झाबुआ (उद्देश्यपूर्ण विधि)					
चयनित तहसील (जनसंख्या विधि)					
थांदला	**पेटलावाद**	**मेघनगर**	**झाबुआ**	**रानापुर**	**कुल गांव**
112	240	110	256	95	813
यनित गांव (निदर्शन संख्या तालिका Random Number Table)					
8	8	8	8	8	40
चयनित उत्तरदाता (कोटा पद्धति एवं उद्देश्यपूर्ण विधि)					
80	80	80	80	80	400

जिले का चयन :– प्रस्तुत अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश के आदिवासी बाहुल्य जिला झाबुआ को उद्देश्यपूर्ण विधि के आधार पर चयनित किया गया।

तहसील का चयन :– अध्ययन क्षेत्र झाबुआ जिले की समस्त तहसीलों जिनमें थांदला, पेटलावाद, मेघनगर, झाबुआ एवं पेटलावाद को जनसंख्या विधि के आधार पर चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

गांवों का चयन :– प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु झाबुआ जिले की पाँच तहसीलों में से **(प्रत्येक तहसील से 8 गांव)** कुल 40 गांवों को दैव निदर्शन विधि द्वारा चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया। इस हेतु सर्वप्रथम सभी तहसीलों के गांवों की सूची शहर से दूरी के आधार पर तैयार की गयी तत्पश्चात् 20 गांव शहर के नजदीक एवं 20 शहर से दूर स्थित गांवों का चयन दैव निदर्शन संख्या तालिका (Random Number Table) का उपयोग कर की गयी।

उत्तरदाताओं का चयन :– अध्ययन में चयनित प्रत्येक गांव से 10 भील जनजाति के उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि का प्रयोग कर 200 उत्तरदाता शहर के नजदीक के गांवों से एवं 200 उत्तरदाता शहर से दूर स्थित गांवों से कुल 400 उत्तरदाताओं को चयनित कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

आँकड़ों का आधार एवं एकत्रण :– प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्त्रोत :– प्राथमिक स्त्रोतों का संग्रहण निर्मित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से अध्ययन क्षेत्र में जाकर उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष सम्पर्क एवं साक्षात्कार, क्षेत्र का निरीक्षण एवं अवलोकन तथा समुह चर्चा के माध्यम से एकत्र किये गये। साक्षात्कार अनुसूची में अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप प्रश्नों का समावेश किया गया।

द्वितीयक स्त्रोत :– द्वितीयक स्त्रोतों के अन्तर्गत विद्वानों द्वारा लिखित ग्रन्थ, सर्वेक्षण प्रतिवेदन, संस्मरण, यात्रा–वर्णन, पत्र डायरी, ऐतिहासिक प्रलेख, शासकीय आंकड़े अनुसंधान प्रतिवेदन, समाचार पत्र, पत्रिका, शोध पत्रिका, संबंधित सरकारी विभागों के वार्षिक प्रतिवेदन, इन्टरनेट, अप्रकाशित सामग्री, अनुसूचित जनजाति विभाग, आदिम जाति कल्याण विभाग, जिला सांख्यिकी कार्यालय, एवं विभिन्न पुस्तकालय आदि से द्वितीयक स्त्रोत एकत्रित किये गये।

तकनीक एवं उपकरण :– संमक एकत्रित करने हेतु अवलोकन पद्धति, समूह चर्चा, अनुसूची, साक्षात्कार पद्धति, एस. पी. एस. एस. (SPSS) सारणीयन एवं फोटोग्राफी का उपयोग किया गया है।

विश्लेषणात्मक पृष्ठभूमि :– आंकड़ों के संकलन के पश्चात् संग्रहित आंकड़ों की छंटनी करके, कम्प्यूटर में प्रविष्ट किया गया तथा एस.पी.एस.एस. (SPSS) पैकेज का प्रयोग करते हुऐ सारणीयन के पश्चात् विश्लेषण करके उपयुक्त निष्कर्ष निकाले गये हैं।

तालिका क्र. 2

उत्तरदाताओं के लिंग से सम्बन्धित जानकारी का विवरण

क्र.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पुरूष	269	67.25
2	महिला	131	32.75
	कुल योग	**400**	**100.0**

तालिका 4 में उत्तरदाताओं के लिंग से सम्बन्धित विवरण दिया गया है जिसके विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 400 उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 67.25 प्रतिशत पुरुष पाये जबकि महिला उत्तरदाताओं का प्रतिशत 32.75 पाया गया।

तालिका क्र. 3

उत्तरदाताओं की उम्र सम्बन्धी जनाकारी

क्र.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	20 वर्ष से 40 वर्ष	95	23.75
2	40 वर्ष से 60 वर्ष	209	52.25
3	60 वर्ष से 80 वर्ष	60	15.00
4	80 वर्ष से अधिक	36	9.00
	कुल योग	**400**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल 400 उत्तरदताओं में से सर्वाधिक 52.25 प्रतिशत उत्तरदाता 40 से 60 वर्ष आयु वर्ग के पाये गये जबकि सबसे कम 9 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये जोकि 80 वर्ष या इससे अधिक आयु के थे। 23.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं का आयु वर्ग 20 वर्ष से 40 वर्ष के बीच पाया गया वहीं 60 वर्ष से 80 वर्ष की आयु वर्ग के उत्तरदाताओं प्रतिशत 15 पाया गया।

तालिका क्र. 4

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति की जानकारी

क्र.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	अविवाहित	77	19.25
2	विवाहित	185	46.25
3	विधवा/विधुर	89	22.25
4	परित्यकता	49	12.25
	कुल योग	**400**	**100.00**

अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति के के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी जिसका विवरण उपर्युक्त तालिका में प्रस्तुत किया गया है। तालिका के विवरण से स्पष्ट होता है कि कुल 400 उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 46.25 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित पाये गये जबकि सबसे कम 12.25 प्रतिशत उत्तरदाता परित्यकत पाये गये। 22.25 प्रतिशत उत्तरदता विधवा और विधुर पाये गये वहीं 19.25 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित पाये गये। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि शिक्षा के प्रचार–प्रसार व आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के कारण विलम्ब से विवाह का प्रचलन बढ़ा है। साथ ही विधवा/विधुर और परित्यक्ता के प्रतिशत वृद्धि सामाजिक व्यवस्था में हो रहे परिवर्तन को दर्शाता है।

तालिका क्र. 5

उत्तरदाताओं के शिक्षा के स्तर सम्बन्धित जानकारी

क्र.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	प्राथमिक	85	21.25
2	माध्यमिक	60	15.0
3	अक्षरी ज्ञान	99	24.75
4	निरक्षर	156	39.0
	कुल योग	**400**	**100.00**

उत्तरदाताओं की शिक्षा से सम्बन्धित जानकारी का विवरण तालिका 7 में प्रस्तुत किया गया जिसके विवरण से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 21.25 प्रतिशत उत्तरदाता प्राथमिक तक की शिक्षा ग्रहण किये हुए हैं 15 प्रतिशत उत्तरदाता माध्यमिक तक की शिक्षा प्राप्त किये हुए हैं। 24.75 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये जिनको केवल अक्षरी ज्ञान है वहीं सबसे अधिक 39 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये जोकि निरक्षर थे।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि यातयात के साधन गैर जनजाति लोगों के सम्पर्क में आने से शिक्षा के प्रति जागरुकता आई है जिससे शिक्षा के स्तर में सुधार आया है। इसके विपरीत शहरों से दुरस्थ क्षेत्रों में निवासरत जनजाति समुदाय में शिक्षा का स्तर आज भी कम है।

तालिका क्र. 6

उत्तरदाता परिवारों का मुख्य व्यवसाय

क्र.	विवरण	पूर्वजों के समय		वर्तमान समय में	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	कृषि	192	48.00	134	33.50
2	व्यवसाय	12	3.00	53	13.25
3	नौकरी	19	4.75	46	11.50
4	मजदूरी	177	44.25	167	41.75
	कुल योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**

स्वतन्त्रता की मात्रा = 3 **5 प्रतिशत स्तर पर अन्तर सार्थक है।**

काई–वर्ग (χ^2) = 84.701 **सारणी मान = 7.815**

उपर्युक्त तालिका में उत्तरदताओं के मूख्य व्यवसाय की जानकारी का विवरण प्रस्तुत किया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि कुल 400 उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 48 प्रतिशत उत्तरदाताओं का पूर्वजों के समय मुख्य व्यवसाय कृषि कार्य था जबकि सबसे कम 3 प्रतिशत उत्तरदाता व्यवसाय करते थे। 44.25 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये जिनका मुख्य व्यवसाय मजदूरी था वहीं 4.75 प्रतिशत उत्तरदाता नौकरी करते थे।

वर्तमान समय में सर्वाधिक 33.75 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये जिनका मुख्य व्यवसाय मजदूरी पाया गया जबकि सबसे कम 11.5 प्रतिशत उत्तरदाता मुख्य व्यवसाय के रूप में नौकरी करते हैं। 33.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मुख्य व्यवसाय कृषि पाया गया वहीं 13.25 प्रतिशत उत्तरदाता व्यवसाय करते हैं।

तालिका से स्पष्ट है कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 3 स्वन्त्रता की मात्रा के लिए काई–वर्ग **(χ^2)** का सारणी मान **7.815** है जो परिकलित मान **84.701** से अत्यधिक कम है इसलिए कहा जा सकता है कि काई–वर्ग **(χ^2)** सार्थक है। अतः दोनों पूर्वजों के समय उत्तरदाता परिवारों का मुख्य व्यवसाय एवं वर्तमान समय में उत्तरदाता परिवारों का मुख्य व्यवसाय सम्बन्धित है स्वतन्त्र नहीं। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

अतः तालिका से स्पष्ट होता है कि पूर्वजों के समय और वर्तमान समय में कृषि कार्य और मजदूरी कार्य में कमी हुई है वहीं व्यवसाय और नौकरी के प्रतिशत में वृद्धि हुई है। इस परिवर्तन का मुख्य कारण वर्तमान समय में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार पाया गया है एवं शिक्षा प्राप्त कर भील जनजाति के लोगों व्यवसाय एवं नौकरी के प्रति रूचि बढ़ रही है।

तालिका क्र. 7

भील जनजाति उत्तरदाताओं द्वारा मनाए जाने वाले त्यौहार

क्र.	विवरण	पूर्वजों के समय		वर्तमान समय में	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	नवाई त्यौहार	152	38.0	177	44.25
2	दीपावली त्यौहार	70	25.00	76	19.00
3	दशहरा त्यौहार	50	17.50	51	12.25
4	होली त्यौहार	72	18.00	51	12.25
5	उपर्युक्त सभी	56	14.00	45	11.25
	कुल योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**

स्वतन्त्रता की मात्रा = 4 **5 प्रतिशत स्तर पर अन्तर सार्थक है।**

काई–वर्ग (χ^2) = 7.950 **सारणी मान = 9.488**

उपर्युक्त तालिका में भील जनजाति उत्तरदाताओं द्वारा मनाए जाने वाले त्यौहारों का विवरण प्रस्तुत किया गया जिसके विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 25 प्रतिशत भील जनजाति के उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि उनके पुर्वजों के समय दीपावली का त्यौहार मनाया जाता था जबकि सबसे कम 14 प्रतिशत प्रतिशत भील जनजाति के उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि उनके पुर्वजों के समय उपर्यक्त सभी त्यौहार मानये जाते थे। 38 प्रतिशत प्रतिशत भील जनजाति के उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि उनके पुर्वजों के समय नवाई का त्यौहार मनाया जाता था वहीं 18 प्रतिशत प्रतिशत भील जनजाति के उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि उनके पुर्वजों के समय होली का त्यौहार मनाया जाता था। 17.50 प्रतिशत प्रतिशत भील जनजाति के उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि उनके पुर्वजों के समय दशहारा का त्यौहार मनाया जाता था।

वर्तमान समय में सर्वाधिक 42.25 प्रतिशत प्रतिशत भील जनजाति के उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि वर्तमान समय में उनके द्वारा नवाई का त्यौहार मनाया जाता है जबकि सबसे कम 11.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्तमान समय में उनके द्वारा उपर्युक्त सभी त्यौहार मानये जाते हैं। 19 प्रतिशत उत्तरदताओं के यहाँ वर्तमान समय में उनके द्वारा दीपावली का त्यौहार मनाया जाता है वहीं 12.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं के यहाँ दशहरा का त्यौहार मनाया जाता है। 12.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके यहाँ वर्तमान समय में होली का त्यौहार मनाया जाता है।

तालिका से स्पष्ट है कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 4 स्वन्त्रता की मात्रा के लिए काई–वर्ग (χ^2) का सारणी मान **9.488** है जो परिकलित मान **7.950** से अधिक है इसलिए कहा जा सकता है कि काई–वर्ग (χ^2) सार्थक नहीं है। अतः दोनों पूर्व के समय में भील जनजाति उत्तरदाताओं द्वारा मनाए जाने वाले त्यौहार एवं वर्तमान समय में भील जनजाति उत्तरदाताओं द्वारा मनाए जाने वाले त्यौहार सम्बन्धित नहीं है स्वतन्त्र हैं। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

तालिका क्र. 8

त्यौहारों/उत्सव पर नृत्य कलाएँ सम्बन्धित जानकारी

क्र.	विवरण	पूर्वजों के समय		वर्तमान समय में	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	परम्परागत नृत्य	262	62.50	204	51.00
2	आधुनिक नृत्य	63	15.75	99	24.75
3	मिश्रित नृत्य	75	18.75	97	24.25
	कुल योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**
स्वतन्त्रता की मात्रा = 2			**5 प्रतिशत स्तर पर अन्तर सार्थक है।**		
काई–वर्ग (χ^2) = 18.605			**सारणी मान = 5.911**		

उपर्युक्त तालिका में भील जनजाति के द्वार मानये जाने वाले त्यौहारों/उत्सव पर नृत्य कलाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया जिसके विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 62.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके यहाँ त्यौहारों/उत्सव पर परम्परागत नृत्य कलाएँ की जाती थी जबकि सबसे कम 15.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा त्यौहारों/उत्सव पर आधुनिक नृत्य कलाएँ की जाती थी। 18.75 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये जिन्होंने बताया कि उनके पूर्वजों के समय त्यौहारों/उत्सव पर मिश्रित नृत्य कलाएँ की जाती थी। वर्तमान समय में कुल उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 51 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके यहाँ त्यौहारों/उत्सव पर परम्परागत नृत्य कलाएँ की जाती हैं जबकि सबसे कम 24.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके यहाँ त्यौहारों/उत्सव पर मिश्रित नृत्य कलाएँ की जाती हैं। 24.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जानकारी दी कि उनके यहाँ त्यौहारों/उत्सव पर आधुनिक नृत्य कलाएँ की जाती हैं

तालिका से स्पष्ट है कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 2 स्वन्त्रता की मात्रा के लिए काई–वर्ग (χ^2) का सारणी मान 5.991 है जो परिकलित मान 18.605 से अत्यधिक कम है इसलिए कहा जा सकता है कि काई–वर्ग (χ^2) सार्थक है। अतः दोनों पूर्वजों के समय त्यौहारों/उत्सव पर नृत्य कलाएँ एवं वर्तमान समय में त्यौहारों/उत्सव पर नृत्य कलाएँ सम्बन्धित है स्वतन्त्र नहीं। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

तालिका क्र. 9

त्यौहारों/उत्सवों पर मनोरंजन हेतु प्रयुक्त किए जाने वाले यंत्रों का विवरण

क्र.	विवरण	पूर्वजों के समय		वर्तमान समय में	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	परम्परागत यंत्र	168	42.00	53	13.25
2	आधुनिक यंत्र	121	30.25	210	52.50
3	मिश्रित यंत्र	111	27.75	117	29.25
	कुल योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**

स्वतन्त्रता की मात्रा = 2	**5 प्रतिशत स्तर पर अन्तर सार्थक है।**
काई–वर्ग (χ^2) = 97.822	**सारणी मान = 5.991**

उपर्युक्त तालिका में त्यौहारों/उत्सवों पर मनोरंजन हेतु प्रयुक्त किए जाने वाले यंत्रों का विवरण प्रस्तुत किया गया जिसके विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 42 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने के द्वारा बताया गया कि उनके यहाँ परम्परागत यंत्रों का प्रयोग त्यौहारों/उत्सवों पर मनोरंजन हेतु किया जाता था जबकि सबसे कम 27.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा बताया कि उनके यहाँ मिश्रित यंत्रों का उपयोग त्यौहारों/उत्सवों पर मनोरंजन हेतु किया जाता था। 30.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके यहाँ आधुनिक यंत्रों का उपयोग त्यौहारों/उत्सवों पर मनोरंजन हेतु किया जाता था। वर्तमान समय में कुल उत्तरदताओं में से 52.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि उनके यहाँ त्यौहारों/उत्सवों पर मनोरंजन हेतु आधुनिक यंत्र प्रयुक्त किए जातं हैं जबकि सबसे कम 13.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके यहाँ त्यौहारों/उत्सवों पर मनोरंजन हेतु परम्परागत यंत्र प्रयुक्त किए जाते हैं। 29.25 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये जिन्होंने बताया कि उनके यहाँ मिश्रित प्रकार के यंत्र त्यौहारों/उत्सवों पर मनोरंजन हेतु प्रयुक्त किए जाते हैं।

तालिका से स्पष्ट है कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 2 स्वन्त्रता की मात्रा के लिए काई–वर्ग (χ^2) का सारणी मान 5.991 है जो परिकलित मान 97.822 से अत्यधिक कम है इसलिए कहा जा सकता है कि काई–वर्ग (χ^2) सार्थक है। अतः दोनों पूर्वजों के समय त्यौहारों/उत्सवों पर मनोरंजन हेतु प्रयुक्त किए जाने वाले यंत्र एवं वर्तमान समय में त्यौहारों/उत्सवों पर मनोरंजन हेतु प्रयुक्त किए जाने वाले यंत्र सम्बन्धित है स्वतन्त्र नहीं। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

तालिका क्र. 10

उत्तरदाता परिवारों का मुख्य व्यवसाय

क्र.	विवरण	पूर्वजों के समय		वर्तमान समय में	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	कृषि	192	48.00	134	33.50
2	व्यवसाय	12	3.00	53	13.25
3	नौकरी	19	4.75	46	11.50
4	मजदूरी	177	44.25	167	41.75
	कुल योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**
स्वतन्त्रता की मात्रा = 3				**5 प्रतिशत स्तर पर अन्तर सार्थक है।**	
काई–वर्ग (χ^2) = 84.701				**सारणी मान = 7.815**	

उपर्युक्त तालिका में उत्तरदताओं के मुख्य व्यवसाय की जानकारी का विवरण प्रस्तुत किया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि कुल 400 उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 48 प्रतिशत उत्तरदाताओं का पूर्वजों के समय मुख्य व्यवसाय कृषि कार्य था जबकि सबसे कम 3 प्रतिशत उत्तरदाता व्यवसाय करते थे। 44.25 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये

जिनका मुख्य व्यवसाय मजदूरी था वहीं 4.75 प्रतिशत उत्तरदाता नौकरी करते थे। वर्तमान समय में सर्वाधिक 33.75 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये जिनका मुख्य व्यवसाय मजदूरी पाया गया जबकि सबसे कम 11.5 प्रतिशत उत्तरदाता मुख्य व्यवसाय के रूप में नौकरी करते हैं। 33.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मुख्य व्यवसाय कृषि पाया गया वहीं 13.25 प्रतिशत उत्तरदाता व्यवसाय करते हैं।

तालिका से स्पष्ट है कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 3 स्वन्त्रता की मात्रा के लिए काई–वर्ग (χ^2) का सारणी मान 7.815 है जो परिकलित मान 84.701 से अत्यधिक कम है इसलिए कहा जा सकता है कि काई–वर्ग (χ^2) सार्थक है। अतः दोनों पूर्वजों के समय उत्तरदाता परिवारों का मुख्य व्यवसाय एवं वर्तमान समय में उत्तरदाता परिवारों का मुख्य व्यवसाय सम्बन्धित है स्वतन्त्र नहीं। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

अतः तालिका से स्पष्ट होता है कि पूर्वजों के समय और वर्तमान समय में कृषि कार्य और मजदूरी कार्य में कमी हुई है वहीं व्यवसाय और नौकरी के प्रतिशत में वृद्धि हुई है। इस परिवर्तन का मुख्य कारण वर्तमान समय में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार पाया गया है एवं शिक्षा प्राप्त कर भील जनजाति के लोगों व्यवसाय एवं नौकरी के प्रति रूचि बढ़ रही है।

तालिका क्र. 11

भील जनजाति में प्रचलित वैवाहिक रीति–रिवाज

क्र.	विवरण	पूर्वजों के समय		वर्तमान समय में	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	परम्परागत	172	43.00	93	23.25
2	आधुनिक	182	45.50	307	76.75
3	मिश्रित	46	11.50	00	0.00
	कुल योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**

स्वतन्त्रता की मात्रा = 2 **5 प्रतिशत स्तर पर अन्तर सार्थक है।**

काई–वर्ग (χ^2) = 71.200 **सारणी मान = 5.911**

उपर्युक्त तालिका में भील जनजाति में प्रचलित वैवाहिक रीति–रिवाज का विवरण प्रस्तुत किया गया जिसके विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 45.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके यहाँ पूर्वजो के समय उस समय की आधुनिक पद्धति के द्वारा विवाह सम्पन्न कराये जाते थे जबकि सबसे कम 43 प्रतिशत उत्तरदताओं ने बताया कि परम्परागत पद्धति के अनुसार ही विवाह सम्पन्न कराये जाते थे। 11.50 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये जिन्होंने बताया कि उनके यहाँ मिश्रित पद्धति के अनुसार विवाह सम्पन्न कराये जाते थे। वर्तमान समय में सर्वाधिक 76.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके यहाँ आधुनिक वैवाहिक रीति रिवाजों का प्रयोग किया जाता है जबकि 23.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके यहाँ अभी भी परम्परागत वैवाहिक रीति रिवाजों के अनुसार विववाह सम्पन्न कराये जाते हैं।

तालिका से स्पष्ट है कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 2 स्वन्त्रता की मात्रा के लिए काई–वर्ग (χ^2) का सारणी मान 5.911 है जो परिकलित मान 71.200 से अत्यधिक कम है इसलिए कहा जा सकता है कि काई–वर्ग (χ^2) सार्थक

है। अतः दोनों पूर्वजों के समय भील जनजाति में प्रचलित वैवाहिक रीति–रिवाज एवं वर्तमान समय में भील जनजाति में प्रचलित वैवाहिक रीति–रिवाज सम्बन्धित है स्वतन्त्र नहीं। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष :– उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में भील जनजाति को शासकीय स्तर पर विभिन्न योजनाओं और परियोजनाओं का लाभ प्रदान कर समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का सराहनीय कार्य किया जा रहा है। इन योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ प्राप्त कर भील जनजाति के लोग अपना सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक विकास करने में सक्षम हो रहे हैं। जिसका इनके जीवन पर प्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होता है। अतः हम कह सकते हैं कि भील जनजाति के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक जीवन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव सकारात्मक रूप से पड़ रहा है लेकिन आज भी ये लोग अन्य जातियों और जनजातियों की तुलना में विशेष रूप से पिछड़े हुये हैं।

सुझाव :– भील जनजाति क्षेत्रों में विकास के लिए शिक्षा का प्रचार–प्रसार किये जाने की आवश्यकता है साथ ही महिलाओं की शिक्षा के स्तर में सुधार हेतु ग्राम स्तर पर समितियाँ बनाकर महिलाओं को शिक्षा महत्व के प्रति जागरुक बनाया जा सके। भील जनजाति लोगों के लिए संचार व तकनीकी ज्ञान का प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए।

सन्दर्भ

1. भारतीय जनगणना 2011, District Census Hand Book जिला झाबुआ, मध्यप्रदेश।
2. बेनडिक्स आर0 (1967) ट्रडिशन एण्ड माडर्निटी रिकंसीडर्ड, कम्पेरेटिव स्टडीज इन सोसायटी एण्ड हिस्ट्री, वॉल्यू – 9 पृ. क्र. 326।
3. देशाई ए. आर. (1971) एसेज ऑन माडर्नाईजेशन ऑफ अन्डरडेवलप्ड सोसायटीज, वाल्यु – 1, ठक्कर एण्ड क. बाम्बे, पृ. क्र. 32।
4. सक्सेना आर. एन. (1972) माडर्नाईजेशन एण्ड डेवलपमेण्ट ट्रेन्ड्स इन इण्डिया, सोशियोलॉजीकल बुलेटिन, वाल्यु – 21।
5. श्रीनिवास एम. एन. (1956) सोशल चेंज इन मॉडर्न इण्डिया, एलाईड पब्लिशर्स, बाम्बे, पृ. क्र. 50।
6. दुबे एस. सी. (1971) एक्सपेंशन एण्ड मैनेजमेण्ट ऑफ चेंज, टाटा मैग्रा हिल, नई दिल्ली, पृ. क्र. 67–68।